International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माता–पिता की आर्थिक स्थिति के सापेक्ष बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास

ज्योति
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सारांशः जन्म के समय बालिकाओं का मन कोरे कागज की तरह होता है। जैसे–जैसे वह बड़ी होती है उनमें नैतिकता का विकास होता है। विकास के क्रम में बालिकाएँ नैतिक और अनैतिक दोनो ही बाते सीखती है और समाज की मान्यताओं के अनुसार नैतिक व्यवहार करती है। नैतिक मूल्यों के विकास में किसी सार्वभौमिक मापदंड की कल्पना नहीं की जा सकती है। नैतिक व्यवहार जन्मजात नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक परिवेश में अर्जित किया जाता है। किशोरावस्था में उनके अंदर विवेक का उदय होता है। वे विवेक से निर्देशित होकर नैतिक व्यवहार की ओर प्रवृत्त होती हैं, तभी उनके अंदर वास्तविक नैतिकता का विकास हो पाता है।

मुख्य शब्दः नैतिकता, मापदंड, प्रवृत्त, किशोरावस्था, मूल्य, विकास।

भूमिकाः बालिकायें अपने पारिवारिक परिवेश एवं सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों को विकसित करती हैं। उनके विकास में माता–पिता, अभिभावक, पड़ोसी, पाठशाला, अध्यापक, पाठ्यक्रम, मित्र–मंडली के साथ ही सामाजिक आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण योगदान पाया गया है। नैतिक मूल्यों के विकास क्रम के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बालिकाओं के विभिन्न आयु स्तरों का उनके नैतिकता में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।

नैतिक व्यवहार जन्मजात नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक परिवेश में अर्जित किया जाता है। प्रारंभ में बालिकाएँ अपने परिवार, पड़ोस और पाठशाला से नैतिक व्यवहार की अनौपचारिक शिक्षा पाती हैं। किशोरावस्था में उनके अंदर विवेक का उदय होता है। वे विवेक से निर्देशित होकर नैतिक व्यवहार की ओर प्रवृत्त होती हैं, तभी उनके अंदर वास्तविक नैतिकता का विकास हो पाता है।

जन्म के समय बालिकाएँ न तो अधिक नैतिक होती हैं और न ही अनैतिक होती हैं। उनका सारा व्यवहार शिक्षा पर आधारित होता है।

नैतिकता की प्रकृति स्थिर न होकर परिवर्तनशील होती है। हरलॉक का कथन है कि ''समूह के द्वारा नियत किए गए कोड के अनुरूप व्यवहार करना ही नैतिक व्यवहार है।''

शोध अध्ययन हेतु चयनित प्रयोज्यों की आर्थिक स्थिति का मापन का उद्देश्य यह जानना था कि वर्तमान समाज में संपन्न परिवार के सदस्यों का दृष्टिकोण, व्यवहार–प्रणाली तथा व्यक्तिगत संरचना निम्न परिवार के सदस्यों से समान होता है या फिर सर्वथा भिन्न। सम्पन्न परिवार की बच्चियाँ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

टेलीविजन, रेडियो, पत्र–पत्रिकाओं और अन्य माध्यमों से अद्यतन सामाजिक समस्याओं से परिचित होती रहती हैं और तद्नुकूल अपने व्यवहार, अपनी प्रेरणाओं, आकांक्षाओं एवं नैतिक मूल्यों को निर्मित करती रहती हैं। दूसरी ओर, निर्धन परिवार की बच्चियाँ होती हैं जिन्हें भले ही आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो गया हो, लेकिन बचपन से ही निर्धनता के परिवेश में विकसित एवं पली–बढ़ी होती हैं। ऐसी संभावना की जाती है कि समस्याओं के प्रति इनका व्यवहार परंपरागत रूढ़ि एवं संकीर्ण विचारों से ग्रस्त रहता है। परिणामस्वरुप उनके प्रत्येक क्रियाकलाप पर उनकी आर्थिक स्थिति का स्पष्ट प्रभाव होने की संभावना है। अतः इस दृष्टिकोण से प्रयोज्यों की आर्थिक स्थिति का मापन कर, इस आधार पर प्रयोज्यों का वर्गीकरण कर उनके अभियोजन के विषमता की समीक्षा की योजना निर्धारित की गई। आर्थिक स्थिति के मापन के लिए व्यक्तिगत सूचना–पत्र में इसे समाहित किया गया।

आर्थिक आधार पर भारतीय समाज तीन भागों में विभक्त है– उच्च आर्थिक स्थिति, मध्यम आर्थिक स्थिति तथा निम्न आर्थिक स्थिति। स्पष्ट है कि इन तीनों वर्गों का रहन–सहन, सुख–सुविधा के साधन, बच्चियों के लालन–पालन के तरीके एक दूसरे से भिन्न है। भारतीय समाज की आर्थिक विषमता चरम सीमा पर है कि जहाँ एक ओर ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें जीवन के मौलिक आवश्यकताएँ भी सहजता से उपलब्ध नहीं है, वहीं दूसरी ओर इस प्रकार के व्यक्ति हैं जिन्हें अपने धन को छुपाने के लिए असंवैधानिक उपायों का आश्रय लेना पड़ता है। गरीबों के बच्चे–बच्चियाँ अच्छे स्कूल में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। उन्हें देश–काल की समस्याओं का कोई ज्ञान नहीं रहता। जबकि अमीरों के बच्चे–बच्चियों की शिक्षा–दीक्षा का प्रबंध पब्लिक स्कूल में या किसी मानक संस्था में किया जाता है, जिससे उत्तम परिवेश में इनका बहुमुखी विकास हो।

प्रतिदर्शः– विभिन्न आय वर्गों को निर्धारित करने के लिए सर्वेक्षण विधि से 500 छात्राओं के प्रतिदर्श से उनकी पारिवारिक आय के संबंध में सूचना व्यक्तिगत सूचना–पत्र के माध्यम से प्राप्त किया गया। प्राप्त जानकारी के आधार पर संपूर्ण प्रतिदर्श (500) को तीन समूहों में बांटा गया– उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग एवं निम्न आय वर्ग।

प्राक्कल्पनाः– इन तीनों ही आय वर्गों की बालिकाओं के संबंध में यह प्राक्कल्पना स्थापित किया गया है कि 'उच्च आय वर्ग के माता–पिता की बालिकाओं में निम्न आय समूह की बालिकाओं की अपेक्षा अधिक नैतिक विकास पाई जाएगी।' तीनों ही आय समूहों की बालिकाओं या प्रयोज्यों की संख्या क्रमशः 170, 200 एवं 130 निर्धारित हुई है। तीनों ही समूहों से प्राप्त प्राप्तांकों का पृथक–पृथक मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी–अनुपात प्राप्त किया गया। तीनों ही आय समूहों से प्राप्त प्राप्तांकों के अंतर की क्रिया को जानने के लिए प्रसरण विश्लेषण विधि का प्रयोग कर एफ–अनुपात प्राप्त किया गया जिसका उल्लेख नीचे सारणी संख्या एक में वर्णित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष एवं व्याख्याः

सारणी संख्या–एक

नमूना आय समूहों के बालिकाओं के नैतिक विकास प्राप्तांकों का प्रसरण विश्लेषण।

प्रसारण श्रोत	डी.एफ	वर्गों का योग	प्रसारण	एफ अनुपात	सार्थकता
लघु समूह	2	400323.46	200162.73	53.75	0.01
वृहत समूह	497	1106503.80	3725.6		

इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि तीनों ही समूहों के प्रसारण विश्लेषण परिणाम पर आधारित एफ–अनुपात विश्वसनीयता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे यह सिद्ध होता है कि तीनों ही आय समूहों के प्रयोज्यों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया है। अतः आर्थिक स्थिति से संबंधित प्राक्कल्पना प्रमाणित हो रही है।

इन तीनों ही आय समूहों के प्राप्तांक मध्यमानों पर आधारित प्राप्तांक मध्यमानों के पृथक–पृथक अंतरों की सार्थकता की जाँच की गई। इस उद्देश्य से मध्यमानों के अंतरों की सार्थकता जाँचने के लिए पृथक–पृथक टी–अनुपात प्राप्त कर उनका तुलनात्मक विवेचन किया गया जिसका उल्लेख सारणी संख्या दो में वर्णित है।

सारणी संख्या दो

उच्च, मध्यम एवं निम्न आय समूहों की बालिकाओं के नैतिक विकास से प्राप्त प्राप्तांको के आधार पर मध्यमानों की तुलनात्मक विवेचन

समूह	संख्या	मध्यमान	प्र. विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता
उच्च आय समूह	170	38.85	11.40	क–ख 4.65	0.01
मध्यम आय समूह	200	48.15	17.55	ख–ग 1.16	असार्थक
निम्न आय समूह	130	42.40	18.80	क–ग 3.30	0.01

तीनों ही आय समूहों (उच्च, मध्यम एवं निम्न) के पृथक–पृथक बालिकाओं के नैतिक विकास एवं माता–पिता से प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 38.85, 48.15 तथा 42.40 प्राप्त हुआ है। इस परिणाम से प्रमाणित होता है कि उच्च आय समूह की अपेक्षा मध्यम आय समूह में उच्च नैतिक विकास पाया जाता है तथा दोनों ही समूहों के मध्यमानों के अंतरों की सार्थकता 0.01 स्तर पर सत्यापित हो रहा है।

मध्य एवं निम्न आय समूहों की बालिकाओं से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलनात्मक व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि मध्यम आय समूह में उच्च तथा निम्न आय समूह के निम्न नैतिक प्रभाव पाया जाता है। लेकिन इन दोनों ही समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता विश्वसनीयता के किसी भी स्तर पर प्रमाणित नहीं हो रहा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उच्च एवं निम्न आय समूहों की बालिकाओं से प्राप्त प्राप्तांको के मध्यमानों के तुलनात्मक व्याख्या से स्पष्ट होता है कि उच्च आय समूह में निम्न तथा निम्न आय समूह में उच्च नैतिक प्रभाव पाया जाता है। दोनों ही समूहों के मध्यमानों के अंतरों की सार्थकता 0.01 स्तर पर सत्यापित हो रहा है।

तुलनात्मक निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:–

(क) उच्च आय समूह की बालिकाओं में निम्न एवं मध्यम आय समूह की बालिकाओं में अपेक्षाकृत उच्च नैतिक मूल्यों का विकास प्रमाणित होता है।

(ख) उच्च आय समूह की बालिकाओं में निम्न तथा निम्न आय समूह की बालिकाओं में अपेक्षाकृत उच्च नैतिक विकास का प्रभाव प्रमाणित होता है।

(ग) मध्यम आय समूह एवं निम्न आय समूह के बीच बालिकाओं के नैतिक विकास पर कोई खास अंतर नहीं पाया गया है।

अतः उपर्युक्त अध्ययन से यह सत्यापित हो रहा है की प्राक्कल्पना विपरीत दिशा में प्रमाणित हो रही है।

Reference

- Foshay, Arthur W. and Wann, Kenneth D. (1954). Children's Social Value, Bureau of Publication, New York.
- Guilford, J. P. (1956). Fundamental statistics in psychology and Education (4th) McGraw Hills, New York, p. 246
- Gupta, O. P. and Gupta, B. D. (1983-84). Mathematical Statistics, Kedar Nath Ram & Co. Meerut.
- Hart, D. (1985). A Longitudinal Study of Adolescents' Socialization and Identification as Predictors of Adult Moral Judgement development, Merville. Palmer Quarterly, 34:245-260.
- Kohlberg, L. (1963). The Development of Children's Orientations towards a Moral Order, Vita Humana.
- Kohlberg, L. and Juriel, E. Moral Development and Moral Education in G. S. Lazer, "Educational Psychology and Educational Practices. Glenview, III Sedt.
- Kohlberg, L. (1968). The Child as a Moral Philosopher, Psychology Today.
- Macauley, F. E. (1968). Children in Socialization and Society, Norton.
- Prinz, R., Sanders, M., Sapiro, C., Whitaker, D. and Lutzker (2009). Population Based Prevention of Child Maltreatment. The U.S. Triple System population Trial Prev. Sci DOI, 10.1007/11121-009-0123-3.